R.N.I. No. U.P.HIN/2002/6271

ISSN 0974-553 X

वर्ष - १०
अंक - ३८

शिक्षा चिंतन

शैक्षिक त्रैमासिक
शोध पत्रिका

त्रिमूर्ति संस्थान
कानपुर

अप्रैल-जून २०११

अनुक्रम

पृष्ठ सं.

सम्पादकीय २

महाविद्यालयी शिक्षा के बदलते प्रतिमान बनाम प्राचार्यों की भूमिका ३

-प्रोफेसर आर. जे. सिंह, डॉ. राखी खरबन्दा "

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के राजनीतिक- ज्ञान का अध्ययन ६

-डॉ. विष्णु कटियार

श्री मां के शैक्षिक विचारों का अध्ययन १८

-डॉ. मधुरिमा सिंह

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों में - 'आयुर्वेद की शिक्षा' २१

-अंशू सरीन, -नेहा मिश्रा

बेरोजगारी की भीड़ तले बी.टी.सी. प्रशिक्षण एक सुन्दर स्वप्न, एक अंधी दौड़ २६

-डॉ. रश्मि श्रीवास्तव

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैयक्तिक भिन्नता एवं उनकी शैक्षिक २८

उपलब्धि : एक अध्ययन -कंचन लता, -अनीता आर्या

शिक्षा का अधिकार अधिनियम की चुनौतियां, तैयारियां, क्रियान्वयन (उत्तरप्रदेश के सन्दर्भ में)

३३

-मो. राशिद खान

प्राथमिक शिक्षा : एक अभिनव प्रयोग ३६

-सुनीता सिंह

आतंक के नियंत्रण हेतु प्राचीन भारतीय कौशल व प्रबन्धन विज्ञान- एक वैचारिक मन्थन ३९

-आर. डी. त्रिवेदी

बी.एड. में मूल्य शिक्षण की आवश्यकता- ४५

-डॉ. डी.सी. मिश्रा

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के राजनीतिक–ज्ञान का अध्ययन

–डॉ. विष्णु कटियार*

सभी देश व समाज का विकास उसके नागरिकों पर निर्भर करता है। वहां के नागरिकों के राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण द्वारा ही देश का विकास सम्भव है। हमारा देश धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र, प्रान्त आदि अनेक विभिन्नताएं लिये हुए है। इन विभिन्नताओं के आधार पर असामाजिक एवं राष्ट्र विरोधी तत्व हमारे देश में समय–समय पर राष्ट्र की एकता के लिये खतरा उत्पन्न करते हैं। हमारे देश की आजादी के बाद देश के विभाजन का आधार साम्प्रदायिकता थी। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी राष्ट्रीय एकता के ये बाधक तत्व अपना प्रभाव दिखाते रहते हैं। देश में सभी धर्मों के लोगों को संविधान में समान रूप से अधिकार दिए गए हैं। इन अधिकारों से प्रत्येक व्यक्ति को संविधान के दायरे में रहते हुये स्वतंत्ररूप से जीने का हक प्राप्त है लेकिन देश के अधिकांश वर्ग गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने के कारण स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं जिसकी वजह से उनमें शारीरिक, मानसिक व नैतिक गुणों का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। जिसके कारण कुछ लोग समय की मार के कारण असामाजिक कार्यों में लिप्त होते जा रहे हैं और वे अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर रहे हैं। यदि हमारे प्रजातांत्रिक देश में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया जाए तो सभी लोगों को शिक्षा, रोजगार उपलब्ध हो जाएंगे और व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी बनकर समाज व देश के उत्थान में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकता है।

इस धर्मनिरपेक्ष देश में लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण धर्मों को उच्च व निम्न धर्मों में विभाजित करके अपना लाभ सिद्ध कर रहे हैं। प्राचीन समय में जागीरदारों ने निम्न वर्गों के लोगों के उत्थान को रोका और आज कुछ राजनेता भी इसी नक्शे कदम पर चलकर उच्च व निम्न वर्ग के बीच जातिवाद शब्द का उपयोग कर

* सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूं (राजस्थान)

उन्हें अलग करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि उनमें संगठन की भावना का विकास नहीं हो पाए। आज हमारे देश में आरक्षण की समस्या एक जटिल समस्या बनती जा रही है। कुछ वर्ग को आरक्षण के बाद भी इसका समुचित लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। इसका सीधा–सीधा फायदा उच्च वर्ग के लोगों को मिल रहा है। जो केवल नाम मात्र के निम्न वर्ग बने बैठे हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने यह जानने का प्रयास करना चाहा है कि आज हमारे देश में अनुसूचित जाति व जनजाति के विद्यार्थी राजनीतिक–ज्ञान के बारे में कितनी जानकारी रखते हैं और इन जानकारियों के आधार पर यह जानने का प्रयत्न किया कि उनका राजनीतिक शिक्षा के प्रति कितना रुझान है।

समस्या कथन :

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के राजनीतिक–ज्ञान का अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों में राजनीतिक–ज्ञान के विभिन्न तत्वों का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के राजनीतिक–ज्ञान सम्बन्धी तत्वों का पता लगाना।
3. राजनीतिक–ज्ञान सम्बन्धी प्रश्नावली का निर्माण करना।

शोध परिकल्पनाएं :

परिकल्पना 1– अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 2– अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 3– अनुसूचित जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 4– अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 5– अनुसूचित जाति के छात्र एवं अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 6– अनुसूचित जाति एवं जनजाति की छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 7– अनुसूचित जाति की छात्राएं एवं अनुसूचित जनजाति की छात्रों के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 8– अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन की विधि :

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :

समूह	कक्षा	छात्र	छात्राएं	कुल विद्यार्थी
अनुसूचित जाति	9 व 10	250	250	500
अनुसूचित जनजाति		250	250	500

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

राजनीतिक – ज्ञान : स्वयं निर्मित

प्रश्नों का सामूहिकरण :

शोध में राजनीतिक–ज्ञान विषय पर प्रयुक्त किए प्रश्न–पत्रों का सामूहिकरण निम्न प्रकार है–

1. एक शब्द या एक वाक्य वाले एकांश = 1–14 तक
2. रिक्त स्थान या एक शब्द वाले एकांश = 15–20 तक
3. हां और ना वाले एकांश =21–30, 33, 35, 36, 37, 38, 39 (सकारात्मक एकांश) 31, 32 व 34 (नकारात्मक एकांश) तक
4. कोष्ठक में सम्भावित उत्तर वाले एकांश = 40–55 तक

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय :–

1. मध्यमान (m)
2. प्रमाप विचलन (SD)
3. टी मूल्य (t)

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष :

परिकल्पना – 1

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
1	अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	1–14	500	9.376	2.775	1.46
	अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी		500	9.126	2.644	स्वीकृत
2	अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	15–20	500	2.832	1.471	.98
	अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी		500	2.920	1.355	स्वीकृत
3	अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	21–30, 33, 34–39	500	11.896	3.203	2.12*
	अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	सकारात्मक	500	11.474	3.078	
4	अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	31,32,24	500	2.072	0.850	4.38*
	अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	नकारात्मक	500	1.828	0.906	
5	अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	40–55	500	10.944	2.909	1.26
	अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी		500	10.724	2.582	स्वीकृत
df (n-2) (1000-2)=998			*0.05 स्तर पर =1.96			

शोधकर्ता ने राजनीतिक प्रश्नावली को 5 भागों में सारणीबद्ध किया। जिनमें कुल 55 एकांश है। परिकल्पना क्रमांक–1 से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर तीन सारणियों में सार्थक अन्तर नहीं मिला, लेकिन दो सारणियों में सार्थक अन्तर पाया गया। इनमें भी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में अनुसूचित जाति के विद्यार्थी संसद, विधान सभा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं राज्यपालों के बारे में राजनीतिक–ज्ञान अधिक रखते हैं।

परिकल्पना –2

अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
6	अनुसूचित जाति के छात्र	1–14	250	9.566	2.559	4.78*
	अनुसूचित जाति के छात्राएं		250	9.796	2.864	
7	अनुसूचित जाति के छात्र	15–20	250	2.752	1.463	1.22
	अनुसूचित जाति के छात्राएं		250	2.912	1.478	स्वीकृत
8	अनुसूचित जाति के छात्र	21–30, 33, 34–39	250	11.356	3.552	3.82*
	अनुसूचित जाति के छात्राएं	सकारात्मक	250	11.436	2.712	
9	अनुसूचित जाति के छात्र	31,32,24	250	1.844	.929	6.18*
	अनुसूचित जाति के छात्राएं	नकारात्मक	250	2.300	.707	
10	अनुसूचित जाति के छात्र	40–55	250	10.904	3.236	.31
	अनुसूचित जाति के छात्राएं		250	10.984	2.546	स्वीकृत
df (n-2) (500-2)=498			*0.05 स्तर पर =1.96			

परिकल्पना क्रमांक–2 से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर दो सारणियों में सार्थक अन्तर नहीं मिला, लेकिन तीन सारणियों में सार्थक अन्तर पाया गया। इनमें अनुसूचित जाति के छात्रों की तुलना में अनुसूचित जाति की छात्राओं का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे स्वष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की छात्रायें छात्रों की तुलना में स्वतंत्रता संग्राम, ब्रिटिश नीति, युद्ध एवं क्रान्तियों आदि के बारे में राजनीतिक–ज्ञान अधिक रखती है।

परिकल्पना –3

अनुसूचित जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
11	अनुसूचित जनजाति के छात्र	1–14	250	9.076	2.661	.42
	अनुसूचित जनजाति की छात्राएं		250	9.172	2.630	स्वीकृत
12	अनुसूचित जनजाति के छात्र	15–20	250	2.804	1.319	1.92
	अनुसूचित जनजाति की छात्राएं		250	3.036	1.384	स्वीकृत
13	अनुसूचित जनजाति के छात्र	21–30, 33, 34–39	250	11.040	3.348	3.18*
	अनुसूचित जनजाति की छात्राएं	सकारात्मक	250	11.908	2.712	
14	अनुसूचित जनजाति के छात्र	31,32,24	250	1.680	.906	3.70*
	अनुसूचित जनजाति की छात्राएं	नकारात्मक	250	1.976	.802	
15	अनुसूचित जनजाति के छात्र	40–55	250	10.080	2.627	5.75*
	अनुसूचित जनजाति की छात्राएं		250	10.368	2.373	
df (n-2) (500-2)=498			*0.05 स्तर पर =1.96			

परिकल्पना क्रमांक–3 से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर दो सारणियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, लेकिन तीन सारणियों में सार्थक अन्तर पाया गया। इनमें अनुसूचित जनजाति के छात्रों की तुलना में अनुसूचित जनजाति की छात्राओं का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे स्वष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति की छात्रायें छात्रों की तुलना में संसद, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं राज्यपालों आदि के बारे में अधिक रखती है।

परिकल्पना – 4

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
16	अनुसूचित जाति के छात्र	1–14	250	9.560	2.559	3.70*
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	9.076	2.661	
17	अनुसूचित जाति के छात्र	15–20	250	2.752	1.463	.42
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	2.804	1.319	स्वीकृत
18	अनुसूचित जाति के छात्र	21–30, 33, 34–39	250	11.356	3.552	1.02
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं	सकारात्मक	250	11.040	3.348	स्वीकृत
19	अनुसूचित जाति के छात्र	31,32,24	250	1.844	.929	2.00*
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं	नकारात्मक	250	1.680	.908	
20	अनुसूचित जाति के छात्र	40–55	250	10.904	3.236	3.13*
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	10.080	2.627	
df (n-2) (500-2)=498			*0.05 स्तर पर =1.96			

परिकल्पना क्रमांक–4 से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर दो सारणियों में सार्थक अन्तर नहीं मिला, लेकिन तीन सारणियों में सार्थक अन्तर पाया गया। इनमें भी अनुसूचित जनजाति के छात्रों की तुलना में अनुसूचित जाति के छात्रो का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि अनुसूचित जाति की छात्रायें छात्र संसद, विधान सभा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं राज्यपालों के बारें जानकारी अनुसूचित जनजाति के छात्रों की तुलना में अधिक रखते है।

परिकल्पना – 5

अनुसूचित जाति के छात्र एवं अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर न हीं पाया जाता है।

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
21	अनुसूचित जाति के छात्र	1–14	250	9.560	2.559	3.36*
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	9.176	2.630	
22	अनुसूचित जाति के छात्र	15–20	250	2.752	1.463	2.23*
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	3.036	1.384	
23	अनुसूचित जाति के छात्र	21–30, 33, 34–39	250	11.356	3.552	1.95
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं	सकारात्मक	250	11.908	2.721	स्वीकृत
24	अनुसूचित जाति के छात्र	31,32,24	250	1.844	.929	1.63
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं	नकारात्मक	250	1.976	.882	स्वीकृत
25	अनुसूचित जाति के छात्र	40–55	250	10.904	3.236	1.83
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	10.368	2.373	स्वीकृत
df (n-2) (500-2)=498			*0.05 स्तर पर =1.96			

परिकल्पना क्रमांक–5 से पता चलता है कि तीन सारणियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया लेकिन दो सारणियों में सार्थक अन्तर पाया गया। इनमें भी अनुसूचित जाति के छात्रों की तुलना में अनुसूचित जनजाति की छात्राओं का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि अनुसूचित जाति की छात्रो की तुलना में अनुसूचित जनजाति की छात्राएं संसद, विधानसभा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं राज्यपालों के बारें अधिक जानकारी रखती हैं।

परिकल्पना – 6

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
26.	अनुसूचित जाति के छात्राएं	1–14	250	8.796	2.864	1.55
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	9.176	2.630	स्वीकृत
27.	अनुसूचित जाति के छात्राएं	15–20	250	2.912	1.478	.97
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	3.036	1.384	स्वीकृत

28.	अनुसूचित जाति के छात्राएं	21–30, 33, 34–39	250	12.436	2.712	2.17*
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं	सकारात्मक	250	11.908	2.721	
29.	अनुसूचित जाति के छात्राएं	31,32,24	250	2.300	.707	4.53*
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं	नकारात्मक	250	1.976	.882	
30.	अनुसूचित जाति के छात्राएं	40–55	250	10.984	2.546	1.74
	अनुसूचित जनजाति के छात्राएं		250	11.368	2.373	स्वीकृत
df (n-2) (500-2)=498			*0.05 स्तर पर =1.96			

परिकल्पना क्रमांक–6 से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर तीन सारणियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, लेकिन दो सारणियों में सार्थक अन्तर पाया गया। इनमें भी अनुसूचित जाति की छात्राओं की तुलना में अनुसूचित जनजाति की छात्राओं का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि अनुसूचित जाति की छात्राओं की तुलना में अनुसूचित जनजाति की छात्राएं संसद, विधानसभा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं राज्यपालों के बारे में राजनीतिक–ज्ञान अधिक जानकारी रखती है।

परिकल्पना – 7

अनुसूचित जाति की छात्राएं एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
31	अनुसूचित जाति के छात्राएं	1–14	250	8.796	2.864	1.13
	अनुसूचित जनजाति के छात्र		250	9.076	2.661	स्वीकृत
32	अनुसूचित जाति के छात्राएं	15–20	250	2.912	1.478	.86
	अनुसूचित जनजाति के छात्र		250	2.804	1.319	स्वीकृत
33	अनुसूचित जाति के छात्राएं	21–30, 33, 34–39	250	12.436	2.712	5.12*
	अनुसूचित जनजाति के छात्र	सकारात्मक	250	11.040	3.348	
34	अनुसूचित जाति के छात्राएं	31,32,24	250	2.300	.707	8.53*
	अनुसूचित जनजाति के छात्र	नकारात्मक	250	1.680	.906	
35	अनुसूचित जाति के छात्राएं	40–55	250	10.984	2.546	2.91*
	अनुसूचित जनजाति के छात्र		250	10.080	2.627	
df (n-2) (500-2)=498			*0.05 स्तर पर =1.96			

परिकल्पना क्रमांक–7 से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर तीन सारणियों में सार्थक अन्तर पाया गया। लेकिन दो सारणियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इनमें अनुसूचित जनजाति के छात्रों की तुलना में अनुसूचित जनजाति की छात्राओं का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की छात्राएं अनुसूचित जनजाति के छात्रों की तुलना में संसद, विधानसभा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं राज्यपालों आदि के बारे में अधिक ज्ञान रखती है।

परिकल्पना – 8

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र व छात्राओं के राजनीतिक–ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी सं.	समूह	एकांश संख्या	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
36.	अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्र	1–14	250	9.516	2.645	3.10*
	अनुसूचित जाति और जनजाति की छात्राएं		250	8.986	2.753	
37.	अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्र	15–20	250	2.778	1.392	2.20*
	अनुसूचित जाति और जनजाति की छात्राएं		250	2.974	1.432	
38.	अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्र	21–30, 33, 34–39	250	11.198	3.452	4.95*
	अनुसूचित जाति और जनजाति की छात्राएं	सकारात्मक	250	12.172	2.726	
39.	अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्र	31,32,24	250	1.762	.902	6.84*
	अनुसूचित जाति और जनजाति की छात्राएं	नकारात्मक	250	2.138	.815	
40.		40–55	250	10.492	2.973	3.96*
			250	11.176	2.466	
df (n-2) (500-2)=498			*0.05 स्तर पर =1.96			

परिकल्पना क्रमांक–8 के अनुसार अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रों की तुलना अनुसूचित जाति और जनजाति की छात्राओं का राजनीतिक–ज्ञान अधिक पाया गया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि अनुसूचित जाति और जनजाति की छात्राएं, अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रों की तुलना में संसद, विधानसभा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं राज्यपालों आदि के बारे में राजनीतिक–ज्ञान अधिक रखती है।

अध्ययन की परिसीमाएं :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर शहर तक ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर शहर के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के 1000 छात्र– छात्राओं पर ही किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाप विचलन और टी मूल्य का ही प्रयोग किया गया है।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. इस प्रकार के अध्ययन को महाविद्यालयी स्तर के सामान्य विद्यार्थियों, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों पर भी यह अध्ययन किया जा सकता है।
2. विद्यालय के शिक्षकों के राजनीतिक–ज्ञान का अध्ययन भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध को राजस्थान के अलावा अन्य प्रान्तों में भी किया जा सकता है।
4. राजनीतिक–ज्ञान का अध्ययन अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
5. शहरी एवं ग्रामीण, राजकीय और पब्लिक स्कूल, छात्रावास और घर पर रहने वाले विद्यार्थियों पर भी राजनीतिक–ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे. सी. : "एजूकेशन रिसर्च : इन इन्ट्रोडक्शन" आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली–1975
2. इण्डियन एजुकेशन एब्सट्रेक्ट्स : एन.सी.आई.आर.टी., नई दिल्ली इश्यू जुलाई – 1998
3. गिलफोर्ड टी.पी. : "फण्डामेंटल स्टैटिक्स इन साइक्लोजिकल एण्ड एजूकेशन" न्यूयार्क
4. जॉनसन पॉलमर : "स्टेटिस्टिकल मैथड इन रिसर्च" एशिया पब्लिकेशन हाउस, बॉम्बे, 1961
5. एम.एम. डॉ. लवानिया एवं शशि के. जैन : "राजनीतिक समाजशास्त्र" रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997
6. रूहेला, सत्यपाल : "भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1999
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति : "मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली– 1986
8. Goswami Lukumani (Jan. 2005) : Univerity News Vol-43, No.-2, Page No. 29, 31 UGC New Delhi
9. Ichilov, Orit, ed. 1990 : Political Socialization, Citizenship Education, and Democracy. New York : Teachers College Press.

■ ■ ■

मैं भारत को अपनी माता तथा आराध्य मानता हूं। भारतवासी मेरे मित्र एवं परिजन हैं। उनकी राजनैतिक तथा सामाजिक मुक्ति के लिये निष्ठापूर्ण अनवरत संघर्ष करना मैं अपना परमधर्म तथा सर्वोच्च कर्तव्य मानता हूं।

–लोकमान्य तिलक

बी.एड. प्रशिक्षण में मूल्य शिक्षण की आवश्यकता
''राष्ट्रीय संगोष्ठी''

दिनांक 12 फरवरी 2011 को डॉ. वीरेन्द्र स्वरूप इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, किदवई नगर कानपुर के प्रांगण में शिक्षा संकाय (बी.एड.) द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी के सूत्रधार प्राचार्य डॉ. डीसी मिश्रा ने सर्वप्रथम मूल्य प्रत्यय को स्पष्ट किया कि मूल्यहीन मानव का जीवन पशुवत होता है।

इस संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता डॉ. आरसी नौटियाल (प्रोफेसर एवं डीन, गढ़वाल विश्वविद्यालय) थे, जिन्होंने मूल्य का शाब्दिक अर्थ, महत्व, उपयोगिता एवं उद्देश्यपूर्णता बताया।

संगोष्ठी के प्रमुख अतिथि डॉ. एससी शुक्ला (प्रोफेसर एवं डीन कुमायूं विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा) ने कहा कि मूल्य शिक्षा की आवश्यकता सदैव रही है, आज भी है और कल भी रहेगी।

संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. आरएस शुक्ला (रिटायर्ड प्रोफेसर एवं डीन शिक्षा संकाय, उदयपुर विश्वविद्यालय) ने धर्म निरपेक्ष देश होते हुये शिक्षा हेतु डॉ. राधाकृष्णन के विचारों का निरूपण किया।

संगोष्ठी में डॉ. एसएस पाण्डेय (प्राचार्य वीएसआईसीएस) तथा श्री आरएन शर्मा (प्रबंधक आक्सफोर्ड माडल इंस्टीट्यूट) ने भी अपने अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये।

इसके पश्चात विभिन्न महाविद्यालयों से आए हुए प्रतिभागियों ने अपने प्रपत्र पढ़े। अंत में इस इंस्टीट्यूट की छात्राओं ने भी पेपर पढ़ने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, इन छात्राओं के विचारों के आधार पर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी की गणना की गई, जो निम्नवत् है–

1– स्मृति मिश्रा – प्रथम
2– प्रियंका द्विवेदी – द्वितीय
3– पुष्पलता गुप्ता – तृतीय

डॉ0. पूनम मदान ने संगोष्ठी का संचालन किया तथा डॉ. अनीता शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

(कृपया पूरी रिपोर्ट अंदर के पृष्ठों पर देखिए)

Published by : Mrs. Kamla Shukla
Editor : Prof. R. S. Shukla
Office address : 1228, Y- Block, Kidwai Nagar, Kanpur- 208 011